अमृत वाणी

जिस प्रकार मैले दर्पण में सूरज का प्रतिबिंब नहीं पड़ता उसी प्रकार मलिन अंतरूकरण में ईश्वर के प्रकाश का प्रतिबिंब नहीं पड़ सकता। -रामकृष्ण परमहंस,

करे कोई भरे कोई

विगत 7 जुलाई को राष्ट्रीय राजमार्ग 30 पर भोंड गांव के पास जिस तरह से एक निजी यात्री बस दुर्घटनाग्रस्त हुई उसे ``आ बैल मुझे मार`` के अलावा और क्या कहा जा सकता है। अक्सर यात्री बस चालकों की यह एक विशिष्टता सी बनती जा रही है कि जैसे जैसे वे घर के करीब पहुंचने लगते हैं वैसे-वैसे मानो अपने होश गंवाने लगते है। न उनका अपने दिमाग पर काबू रहता है और न सोच पर। यही वजह है कि न वे अपने वाहन की गति पर नियंत्रण रख पाते हैं और न उसके संचालन के तौर तरीकों पर और इन सबका एक ही नतीजा होता है और वह है एक से बढ़कर एक भयानक दुर्घटना।

शनिवार को उस बदकिस्मत यात्री बस के साथ भी वहीं हुआ। तड़के 5 बजे के करीब यह निजी यात्री बस रायपुर से जगदलपुर आ रही थी। भोंड गांव के पास एक ट्रक को ओव्हरटेक करते हुए सामने से आ रही दूसरी यात्री बस से जा टकराई। यह बस कितनी तेज गति से भाग रही थी अंदाजा इसी बात से लगाया जा सकता है कि टक्कर में उसके सामने के हिस्से के परखच्चे उड़ गए और दस यात्रियों को चोटे आई। अर्थात गंतव्य के करीब आते ही पहुंचने की इतनी जल्दी कि न गति पर नियंत्रण न ओव्हरटेक की सतर्कता का पालन और न यात्रियों की सुरक्षा की कोई चिंता। मानो सड़क पर अकेले वे ही हैं। आश्चर्य होता है चालको की ऐसी लापरवाही देखकर। अपनी मनमानी करते समय एक बार भी वे ये नहीं सोचते की इतने सारे यात्रियों की सुरक्षा की जिम्मेदारी उनके कंधों पर है और दूसरी ओर जो यात्री एक मात्र चालक के भरोसे बस पर सवार होते है उनकी जान कभी भी दांव पर लग जाती है।

हर दुर्घटना के पीछे अंतत: यही कारण सामने आता है कि यातायात नियमों की अनदेखी और चालकों की गैर जिम्मेदारी ही उसका कारण है फिर भी न जाने क्यों लोग बार-बार उन्ही गल्तियों को दोहराते है और यात्रियों के साथ-साथ अपनी जान को भी जोखिम में डालते है। वर्तमान यात्री बस दुर्घटना में बुरी तरह घायल चालक की हालत भी नाजुक बताई जा रही है।

शासन दुर्घटनाएं रोकने नियम पर नियम बना रही है। यातायात विभाग उन्हें क्रियान्वित करने अपनी ओर से यथासंभव कोशिश करता है लेकिन जमीनी स्तर पर वास्तव में जिन्हे उन्हें अपनाना है अगर वे ही उनकी अनदेखी करें तो कौन किसका भला कर सकता है और कैसे सुधर सकती है व्यवस्था।

क्रिकेट के पर्याय थे पुरूषोत्तम रूंगटा

आज पुण्यतिथि पर विशेष

भारतीय क्रिकेट कंट्रोल बोर्ड एवं राजस्थान क्रिकेट संघ के पूर्व अध्यक्ष पुरूषोतम रूंगटा के निधन के साथ क्रिकेट प्रशासन के एक युग का अन्त हो गया। अपने परिजनोए मित्रों प्रशंसको व क्रिकेट जगत में भाई जी के नाम से लोकप्रिय पुरूषोतम रूंगटा ने भारतीय क्रिकेट कंटोल बोर्ड एवं राजस्थान किक्रेट संघ के अध्यक्ष के रूप में क्रिकेट खेल के प्रचार-प्रसार और विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभायी। राजस्थान के शेखावाटी अंचल की विभूति पुरूषोतम रूंगटा सिर्फ एक नाम ही नहीं बल्कि एक कुशल खेल प्रशासक, सफल ओद्योगिक घराने के मुखिया और क्रिकेट की दुनिया के मील के पत्थर थे।

भारतीय क्रिकेट के पर्याय रहे पुरूषोतम रूंगटा का जन्म राजस्थान में झुंझुनू जिले के बगड़ कस्बे में 7 जुलाई 1928 को महावीर प्रसाद रूंगटा एवं नर्बदा देवी के घर में हुआ था। एक बनिक परिवार में जन्म लेनें के उपरान्त भी पुरूषोतम रूंगटा का मन व्यापार से अधिक खेल जगत में लगता था । क्रिकेट खेल के प्रति इसी कशिश के चलते पुरूषोतम रूंगटा ने अपना सम्पूर्ण जीवन न सिर्फराज्य स्तर पर बल्कि अन्तर्राष्टीय स्तर के क्रिकेट आयोजन के लिये लगा दिया ।

अपनी गरिमामयी क्रिकेट यात्रा के दौरान उन्होने जो उपलब्धिया हासिल की वह एक इतिहास बन चुकी है। भारतीय क्रिकेट जगत के वट्ट वृक्ष पुरूषोतम रूंगटा भारतीय क्रिकेट कंट्रोल बोर्ड के अध्यक्ष तथा कोषाध्यक्ष भी रहे। पुरूषोतम रूंगटा 1952 से 1972 तक भारतीय क्रिकेट कंट्रोल बोर्ड के उपाध्यक्षए कोषाध्यक्ष सहित विभिन्न पदों पर रहे। 1972.73 व 1974.75 तक रूंगटा दो बार भारतीय क्रिकेट कंटोल बोर्ड के अध्यक्ष रहे। कोषाध्यक्ष के रूप में उनके द्वारा किये गये उत्कृष्ट कार्य को देखते हुऐ भारतीय क्रिकेट बोर्ड ने उन्हे 18 वर्षा तक बोर्ड की वित्तीय समिति का अध्यक्ष बनाकर उनकी प्रतिभा का लाभ बोर्ड के सफल संचालन के लिये उठाया। उनकी आयोजन क्षमता का अन्दाजा इसी बात से लगाया जा सकता है कि एक समय जब दिल्ली और उड़ीसा क्रिकेट संगो में विवाद चल रहा था तब भारतीय क्रिकेट कंट्रोल बोर्ड ने रूंगटा को दिल्ली और कटक में अन्तर्राष्ट्रीय मैचों के आयोजन की जिम्मेदारी सौंपी जिसे उन्होने सफलता पूर्वक निभाया भी। ।

राजस्थान क्रिकेट संघ के अध्यक्ष की बागडोर भी उन्होने ऐसे समय में सम्भाली जब क्रिकेट से संघ को कोई आय नहीं होती थी। अपने स्वयं के खर्चे से वर्षो तक राजस्थान के क्रिकेट को चलाने वाले पुरूषोतम रूंगटा ने राज्य क्रिकेट संघ से जुडे खिलाडियोए प्रशासको और अधिकारियो को पिता तुल्य स्नेह देकर देशभर में ख्याति अर्जित की। जयपुर को वर्ष 1987 में टेस्ट मैच खेलने वाले शहर का दर्जा दिलाने तथा गुलाबी नगर को एक दिवसीय अन्तर्राष्ट्रीय मैचो का केन्द्र बनाने में पुरूषोतम रूंगटा ने महत्वपूर्ण भूमिका निभाई । भारत में विश्वकप का पहला टूर्नामेंट भी रूंगटा के प्रयासों से ही संभव हो पाया था। क्रिकेट की मक्का माने जाने वाले आस्ट्रेलिया के मेलबोर्न क्रिकेट क्लबए एमसीसी के वो एशिया महाद्वीप से पहले सदस्य बने थे।

एक बेहद जिंदादिल और आदर्श व्यक्तित्व के धनी पुरूषोतम रूंगटा रॉयल वेस्टर्न टर्फ क्लब ;महालक्ष्मी रेसकोर्सएमुम्बईद्ध के भी अध्यक्ष रहे । रूंगटा 1948 में राजस्थान फुटबाल एसोसियेशन के उपाध्यक्षए 1950.51 में बास्केटबाल संघ के राष्ट्रीय उपाध्यक्ष और बैडमिंटन संघ के भी राष्ट्रीय उपाध्यक्ष रहे।

अनेक समाजसेवी और जनहित संस्थाओ के सरंक्षक पुरूषोतम रूंगटा द्वारा अपनी जन्मस्थली बगड़ में स्थापित संस्कृत महाविद्यालय आज देश के अग्रणीय संस्कृत महाविद्यालयो में से एक है। पुरूषोत्तम रूंगटा के पुत्र किशोर रूंगटा भी भारतीय क्रिकेट कंट्रोल बोर्ड के कोषाध्यक्ष तथा उनके भाई किशन रूंगटा दो बार भारतीय क्रिकेट कंट्रोल बोर्ड की चयन समिमि के अध्यक्ष रहे हैं। अपने विशाल व्यक्तित्व से उन्होने न सिर्फखेल जगत से जुडे लोगो के दिलो में अपना प्रभाव छोडा बल्कि राजनैतिकए सामाजिक ए सांस्कृतिक एवं व्यापारिक जगत से जुड़े लाखो लोग उनकी मेहमानवाजी और दरियादिली से प्रभावित थे। 12 जुलाई 2012 को 84 वर्ष की उम्र में लम्बी बिमारी के बाद पुरूषोत्तम रूंगटा का निधन हो गया।

रमेश सर्राफ धमोरा
(ये लेखक के अपने विचार है)

सेना की गोपनियता का भंग होना राष्ट्रहित में कदापि नहीं

आंतकवादी गतिविधियों में विस्तार हुआ है। सेना के कीमती जवानों सहित कई निर्दोशों की जान बेवजह गई है। जिसकी शहादत को किसी भी कीमत पर भुलाया नहीं जा सकता। इस तरह के हालात गत दिनों रमजान काल में जम्मू . कश्मीर में सेना पर शांति पहल के तहत केन्द्र सरकार द्वारा राज्य सरकार की विशेष मांग पर कार्यवाही किये जाने पर प्रतिबंध लगाये गये जिससे वहां आतंकवादियों का मनोबल बढ़ा एवं कई निर्दोश जानें गई। अंत में रमजान काल के समाप्त होते ही सेना को स्वतंत्र कर दिया गया जिससे आतंकवादी गतिविधियों पर अंकुश लग पाया एवं वहां की आम जनता को सकून मिला । इसी तरह सीमा पर पाक की बढ़ती नापाक हरकतों पर सेना द्वारा की गई सर्जिकल स्ट्राईक पर हो रही अनर्गल बहस एवं राजनीति की प्रक्रिया आज भी जारी है। मीडिया में सर्जिकल स्ट्राईक के पहलुओं को दिखाया जाना ए इसे सार्वजनिक किया जाना सेना की गोपीनियता को भंग करता हैए जो कि राष्ट्रहित में कदापि नहीं हो सकता।

> **सेना**
> देश की शान होती है जो हर संकट व मुसिबतों के समय देशवासियों की रक्षा करती है। देश की बाहरे एवं आंतरिक विरोधी शक्तियों का मुकाबला कर देश की प्रतिष्ठा को बचाती है। आज हम सभी अपनी सेना के बल पर ही अपने आप को सुरक्षित महसूस कर रहे है। सेना को अधिकार है कि देश की रक्षा में जो उचित लगेए दुश्मनों के खिलाफकार्यवाही करे। इस दिशा में वह हर तरह से स्वतंत्र है। जब भी उसकी इस स्वतंत्रता पर किसी भी तरह अकुंश लगाने की राजनीतिक कोशिश की गईए देश विरोधी ताकतों का मनोबल बढ़ा है।

आतंकवाद अपने आप में आज अघोषित युद्ध हो गया है जिसका छद्म रूप युद्ध से भी ज्यादा खतरनाक साबित हो रहा है। आये दिन देश या विदेश का कौन सा प्रभाग इसके चंगुल का शिकार हो जाय, कह पाना मुश्किल है। देश के भीतरी भाग में एवं सीमा प्रांतो पर घटित आतंकवादी घटनाएं, युद्ध से भी ज्यादा खतरनाक साबित हो रही है। जिसे पडौसी देश पाक से समर्थन भरपूर मिल रहा है। इस तरह के विनाशकारी परिवेश से आज हम कहीं भी अछूते नहीं रह गये हैं। जब से शांति पहल एवं पड़ौसी देश पाक से बेहत्तर संबंध बनाने की दिशा में सदियों से बंद पड़े रास्ते खोल दिये गये तब से देश के भीतरी भाग में आतंकवादी गतिविधियां सर्वाधिक सक्रिय होती दिखाई देने लगी है। देश की अर्थव्यवस्था पर प्रतिकूल प्रभाव डालने वाली जाली नोटों का देश में बड़े पैमाने पर विस्तार होता गया। इस तरह के निर्णय देश के हित में अहितकारी ही साबित हुए। जब.जब यह द्वार खुला है आतंकवादी घुसपैठियों की जमात देश के भीतरी तह तक आसन जमाती गई हैं। दिल्ली, जयपुर, अहमदाबाद, मुम्बई जैसे अनेक चर्चित शहर तो इसके शिकार हो ही रहे हैं, देश की सर्वोच्च अस्मिता संसद भी इस तरह के परिवेश से अछूती नहीं रही है। जब संसद ही सुरक्षित नहीं रही है तो हम सब कहां तक सुरक्षित हैं, विचारणीय मुद्दा है। इस तरह के उभरते परिवेश में सेना का स्वतंत्र होना बहुत जरूरी है एवं उसके किसी भी कर्यवाही को राजनीतिक लाभ के तहत किसी प्रकार से सार्वजनिक किये जाने की प्रक्रिया राष्ट्रहित में कदापि नहीं हो सकती।

आज पाक की नापाक हरकतों से सभी भलिभॉति परिचित है। पाक में लोकतांत्रिक सरकार जरूर है पर वहां सेना सर्वापरि है। सेना के अलावे वहां आंतकवादियों का फैला सम्राज्य वहां की सरकार पर हावी है। जिससे भारतीय सीमा पर सदैव खतरा बना रहता है। जब पड़ौसी पड़ौसी की ही परिभाषा को नहीं समझ पा रहा है। फिर उसके साथ पड़ौसी धर्म निभाने की ऐसी कौन सी मजबूरी आ गई, जिसके तहत सभी बंद द्वार खोल दिये जाते रहे जिन रास्तों से देश के भीतरी भाग तक आतंकवादी पसर गये। कब कहां बम विस्फोट हो जाय, कह पाना मुश्किल है। इस तरह के हालात पर सभी को मंथन करने आवश्यकता है एवं एकमत होकर देशहित में दुश्मनों के खलाफ सेना द्वारा की जा रही कार्यवाही पर अनर्गल बहस की राजनीति बंद कर सकरात्मक कदम उठाने की जरूरत है।

भारतीय सेना पर हम सभी को गर्व है जो सीमा पर उभरते सभी प्रकार के कष्ट को झेलकर एवं अपने प्राण जोखिम डाल देश की रक्षा में हर पल समर्पित रहती है, जिसके वजह से ही आज हम सब सुरक्षित है। पूर्व में हु, पडौसी देश पाक एवं चीन द्वारा किये गये युद्ध एवं आतंकवादी गतिविधियों के खिलाफ भारतीय सेना के वीर जवानों ने जंग लड़ा एवं विजय हासिल कर देश का गौरव सदैव ही सर्वोपरि रखा । जिसके त्याग एवं बलिदान से भारतीय झंडा आज भी लहरा रहा है। इस दिशा मे हमने अनेक सपूतों को खो दिया पर देश की आन व शान पर आजतक आंच नहीं आने दी। सर्जिकल स्ट्राईक भी देशहित में सेना द्वारा दुश्मनों के खिलाफकी गई कार्यवाही है जिसपर राजनीतिक बहस आज भी जारी है। जिसकी गोपीनियता भंग करने की भी प्रक्रिया चल रही है। दुश्मनों के खिलाफ सेना द्वारा की गई किसी भी कार्यवाही पर राजनीतिक बहस की प्रक्रिया देशहित में तत्काल बंद होनी चाहिए एवं सेना की कार्यवाही एवं भावी योजना की गोपीनियता को किसी भी प्रकार उजागर नहीं किया जाना चाहिए। आज सेना सुरक्षित है तो हमसभी सुरक्षित है। सेना हर एक जवान देश की शान है जिसकी हिफाजत करना हर भारतवासियों का पुनीत धर्म है। जिसकी किसी भी कीमत पर स्वहित में राजनीतिक बलि का शिकार नहीं होने देना चाहिए।

डॉ. भरत मिश्र प्राची
(ये लेखक के अपने विचार है)

राजकाज

ऐसे में कैसे होगा कानून का राज

उत्तर प्रदेश के भाजपा विधायक सुरेंद्र सिंह ने देश में बच्चियों के साथ हो रहे गैंगरेप और हत्याओं को लेकर विवादित बयान देकर सभी का ध्यान अपनी ओर खींच लिया है। विधायक ने कहा कि शर्म दावे से कह सकता हूं कि भगवान राम भी आ जाएंगे तो इन घटनाओं ;रेपद्ध पर नियंत्रण कर पाना संभव नहीं है।श् इस कथन को लेकर विरोधियों ने उन्हें निशाने पर लिया और कहा कि प्रदेश से जंगलराज खत्म करने के लिए जनता ने मौका दिया है, लेकिन इनके बयानों से तो यही लगता है कि ये खुद जंगलराज के हिमायती हैं, ऐसे में कानून का राज कैसे स्थापित हो सकता है। यह अलग बात है कि विधायक ने आगे यह भी कह दिया कि यह सामाज का स्वाभाविक प्रदूषण है, जिससे कोई भी वंचित नहीं रहने वाला है। मतलब सामाजिक ताने.बाने में परिवर्तन करते हुए ही इस समस्या का समाधान निकाला जा सकता है। इसमें कानून प्रभावी सिद्ध नहीं होता है।

माल्या ने दिया दो टूक बयान

भारतीय बैंकों से नौ हजार करोड़ रुपए से अधिक का कर्ज लेकर लंदन में रह रहे शराब कारोबारी विजय माल्या ने संपत्ति जब्त करने जैसी बातें करने वालों को दो टूक जवाब दिया है। दरअसल माल्या का कहना है कि ब्रिटेन में उनकी कोई प्रॉपर्टी नहीं है। लंदन में जो भी प्रॉपर्टी है, वह उनकी मां और बच्चों के नाम है। इसलिए उनकी इस प्रॉपर्टी को कोई छू भी नहीं सकता है। माल्या ने यह जरुर कहा कि ब्रिटेन में उनके नाम बस कुछ कारें और ज्वैलरी ही हैं, जिन्हें वह कभी भी सौंपने को तैयार हैं। इससे पहले ब्रिटिश अदालत ने अधिकारियों को आदेशित किया था कि वो माल्या की संपत्तियों की जांच करें। इसके बाद ही कयास लगाए जा रहे थे कि उनकी संपत्ति जब्त की जा सकती है, लेकिन मालया ने बयान देकर सभी को मानों चुनौती दे दी है।

आज दो खबरों ने मेरा ध्यान एक साथ खींचा। एक तो दक्षिण कोरिया के सहयोग से दुनिया का सबसे बड़ा मोबाइल फोन का कारखाना भारत में खुलना और दूसरा देश की छह शिक्षा संस्थाओं को सरकार द्वारा प्रतिष्ठित घोषित करना ताकि वे विश्व.स्तर की बन सकें। दोनों खबरें दिल को खुश करती हैं लेकिन उनके अंदर जरा झांककर देखें तो मन खिन्न होने लगता है। दोनों खबरों की एक-दूसरे से गहरा संबंध है। दोनों शिक्षा से जुड़ी हैं। पांच करोड़ लोगों का यह छोटा.सा देश सवा सौ करोड़ के भारत को मोबाइल बनाना सिखाएगा आप डूब क्यों नहीं मरते आपको शर्म क्यों नहीं आती 70 साल आप भाड़ झोंकते रहे।

विश्व गुरु को बना रहे हैं विश्व चेला

नकल करते रहे। कभी कार की नकल कर ली, कभी फोन की, कभी रेल की, कभी जहाज की, कभी रेडियो की, कभी टीवी की, कभी इसकी, कभी उसकी ! अरे प्रधानमंत्रियों और शिक्षामंत्रियों, तुमने किया क्या इस महान राष्ट्र को, इस नालंदा और तक्षशिला के राष्ट्र को तुमने नकलचियों की नौटंकी बना दिया। तुम्हारे विश्वविद्यालयों ने कौनसे मौलिक अनुसंधान किए हैं, जिन्होंने दुनिया की शक्ल बदली हो अब दुनिया के 100 सर्वश्रेष्ठ विश्वविद्यालयों की सूची में भारत का नाम जुड़वाने के लिए आप इतने बेताब हो रहे हैं कि पांच सरकारी और पांच निजी शिक्षा संस्थानों के माथे पर प्रतिष्ठित की चिपकी लगाकर उन्हें रस्सा कुदवाएंगे इसका अर्थ भी आप समझते हैं या नहीं घ् क्या इसका अर्थ यह नहीं कि पश्चिम के शिक्षा मानदंडों की नकल आप हमारे विश्वविद्यालयों से करवाएंगे ताकि वे उनकी पंगत में बैठने लायक बन सकें। धिक्कार है ऐसी प्रतिष्ठा पर! हमारे इन अधपढ़ और अनपढ़ नेताओं को शिक्षा के मामलों की बुनियादी समझ होती तो हम अपनी प्राचीन गुरुकुल पद्धति की नींव पर आधुनिक शिक्षा की ऐसी अट्टालिका खड़ी करते कि दुनिया के वे सर्वश्रेष्ठ विवि हमारी नकल करते। हम अध्यात्म और विज्ञानए आत्मा और शरीरए इहलोक और परलोक, अभ्युदय और निःश्रेयस, आर्य और अनार्य गांव और शहर, गरीब और अमीर.. सबके उत्थान का मार्ग दुनिया को दिखाते। भारत को विश्वगुरु बनाने का दम भरनेवाले राष्ट्रवादी लोग उसे भौतिकतावादी दुनिया का चेला बनाने के लिए किस कदर बेताब हो रहे हैं उनकी लीला वे ही जानें।

डॉ. वेदप्रताप वैदिक
(ये लेखक के अपने विचार है)